डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन युनिवर्सिटी
सत्रांत परीक्षा जनवरी-२०१४

अभ्यासक्रम : डिप्लोमा इन संस्कृति लेंग्वेज (DSL)

नोंधणी नंबर :____________

पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा : स्वरूप और परिचय (DSL-01)
तारीख : 29/01/2014
समय : 11.00 to 12.30
सूचना : १. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।
२. सभी प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दर्शाये गये हैं । कुल अंक : ३५

પ્રશ્ન નં.૧ ભાષાની વ્યાખ્યા આપી ભારોપીય પરિવારની શાખાઓનો વિસ્તૃત પરિચય આપો. (૧૦)

અથવા

મહાકવિ કાલિદાસ અંગેની દંતકથાઓ જણાવી તેમના સમય અંગેનાં વિદ્વાનોનાં વિવિધ મત જણાવો.

પ્રશ્ન નં.૨ ટૂંકનોંધ લખો : મહાકવિ ભાસનું પ્રદાન (૧૦)

અથવા

આજ્ઞાર્થ (लोट्) નો પ્રયોગ ક્યારે થાય છે, તે ઉદાહરણ સહિત સમજાવો.

પ્રશ્ન નં.૩

(૧) ભર્તૃહરિ વિરચિત નીતિશતકનો પરિચય આપી તેનો કોઈ એક શ્લોક લખો.
(૨) કોઈ ત્રણ સ્વરચિત કર્તરિ વિધાન લખો અને તેને કર્મણિમાં ફેરવો.
(૩) આપેલા પાંચ શબ્દોનો શુદ્ધિ સંસ્કૃતમાં વાક્ય પ્રયોગ કરો.
(१) नृपस्य (२) हरये (३) मात्रा (४) गुरुणाम्
(५) नद्याम्
(૪) મહાકવિ બાણની એક કૃતિનો ટૂંકમાં પરિચય આપો
(૫) વર્તમાનકાળ, આજ્ઞાર્થ અને હ્યસ્તન ભૂતકાળનો ઉપયોગ કરી બે બે વાક્યો સંસ્કૃતમાં લખો.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन युनिवर्सिटी
सत्रांत परीक्षा जनवरी-२०१४

अभ्यासक्रम : **डिप्लोमा इन संस्कृति लेंग्वेज** (DSL)

नोंधणी नंबर :_____

पाठ्यक्रम : **प्रशिष्ट संस्कृत साहित्यनो परिचय** (DSL-02)

तारीख : 29/01/2014

समय : 12.30 to 02.00

सूचना : **१. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

३. सभी प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दर्शाये गये हैं । कुल अंक : ३५

प्रश्न नं. १ *यजुर्वेदनां विषयोनुं रसदर्शन करावी यजुर्वेदनुं महत्त्व स्पष्ट करो.* *(१०)*

अथवा

ऋग्वेद कालीन संस्कृति अंगे नोंध लखो.

प्रश्न नं. २ *वैदिक तथा वेदोत्तर वैदिक कथाओनो परिचय आपो.* *(१०)*

अथवा

पंचतंत्रनो सविस्तार परिचय आपो.

प्रश्न नं. ३ *नीचेनामांथी गमे ते त्रणनां उत्तर आपो.* *(१५)*

१. *हितोपदेशनुं विषयवस्तु स्पष्ट करो.*

२. *जैन कथाओनी लोकप्रियता अंगे तमारो मत प्रगट करी कारणो आपो.*

३. *वेदांगनो अर्थ स्पष्ट करी तेनुं कर्तृत्व समजावो.*

४. *हिरण्यगर्भ सूक्तनो टूंकमां परिचय आपो.*

५. **'अथ स राजा त्रिविक्रमसेनः वेताभमानेतुं शिंशपातरुमूलमगच्छत् ।'** - *प्रस्तृत विधान कई कथानुं छे ?– ते कथानो सार जणावो.*

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन युनिवर्सिटी
सत्रांत परीक्षा जनवरी-२०१४

अभ्यासक्रम : **डिप्लोमा इन संस्कृति लेंग्वेज** (DSL)

नोंधणी नंबर :_____

पाठ्यक्रम : **दर्शन साहित्य, धर्मशास्त्र और व्यावारिक व्याकरण** (DSL-03)

तारीख : 30/01/2014

समय : 11.00 to 12.30

सूचना : **१. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

४. सभी प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दर्शाये गये हैं । कुल अंक : ३५

प्रश्न नं. १ *शंकराचार्यनो परिचय आपी तेमना सिद्धांतो तथा शांकरदर्शननां प्रमाण साहित्य विशे नोंध लखो.* *(१०)*

अथवा

आचार्य कणादनो परिचय आपी वैशेषिकदर्शन परंपरा- सिद्धांतो पर नोंध लखो.

प्रश्न नं. २ *संस्कृत भाषामां प्रेरकवाक्य रचना अने ईच्छादर्शक प्रयोग उदाहरण सहित समजावो.* *(१०)*

अथवा

व्यंजन संधिनी समज मूर्धन्यीकरण घोषीकरण अने अघोषीकरणना संदर्भमां स्पष्ट करो.

प्रश्न नं. ३ *नीचेनामांथी गमे ते त्रणनां उत्तर आपो.* *(१५)*

१. *स्मृति अनुसार आश्रम व्यवस्थानो टूंकमां परिचय आपो.*
२. *भाष्यनां जाणकारोओ आपेली भाष्यनी व्याख्या लखो.*
३. *'संबंधक भूतकृदंत' उदाहरण सहित समजावो.*
४. *'प्रगृह्यसंज्ञा'नुं पाणिनिओ आपेल सूत्र आपी अने समजावो.*
५. *न्यायदर्शन अनुसार हेत्वाभास एटले शुं ? टूंकमां समजावो.*

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन युनिवर्सिटी
सत्रांत परीक्षा जनवरी-२०१४

अभ्यासक्रम : **डिप्लोमा इन संस्कृति लेंग्वेज** (DSL)

नोंधणी नंबर :_____

पाठ्यक्रम : *संस्कृत काव्य विवेचन अने गुजरातनुं संस्कृत साहित्यमां प्रदान* (DSL-04)
तारीख : 29/01/2014
समय : 12.30 to 2.00
सूचना : **१. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**
५. सभी प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर दर्शाये गये हैं । कुल अंक : ३५

प्रश्न नं. १ काव्यशास्त्रना संदर्भमां रीति विचार तथा वक्रांक्तिविचार सविस्तार समजावो. *(१०)*

अथवा

भामह, दंडी अने वामन द्वारा प्रस्तुत काव्य विभावना स्पष्ट करो.

प्रश्न नं. २ सोलंकी काल दरम्यान गुजरातनां प्रदान स्वरुप कोई बे महाकाव्योनो परिचय आपो. *(१०)*

अथवा

गुर्जर महाकवि- एवा महाकवि भट्ट तथा महाकवि माधनुं संस्कृत साहित्यमां प्रदान वर्णवो.

प्रश्न नं. ३ नीचेनामांथी गमे ते त्रणनां उत्तर आपो. *(१५)*

१. वसंतविलास ना रचयिता बालचंद्रनो परिचय आपो.
२. आचार्य मम्मटने मते काव्यनी व्याख्या आपो.
३. प्रा.डॉ. ए.डी.शास्त्रीनो आधुनिक संस्कृत साहित्यकार तरीके परीचय आपो.
४. **प्रबुद्धरौहिणेयम्** *नाटक तथा तेनां रचैतानो परिचय आपो.*
५. सोलंकीकाळमां रचायेल **द्रौपदीस्वयंवर** *रुपकनो तथा तेना रचैतानो परिचय आपो.*